Answers to RSPL/3

खंड–क

1. (क) बिल्ली का रास्ता काट जाना, घर पर उल्लू का बोलना, टूटते तारे को देखना आदि ऐसी मान्यताएँ और विश्वास हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। इसी कारण इनको अंधविश्वास कहा जाता है।

(ख) सही जानकारी का अभाव, धर्म का प्रभाव तथा शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार न होने से भारतीय समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित नहीं हो पा रहा है। इन्हीं कारणों से भारतीय समाज से अंधविश्वास जाने का नाम नहीं ले रहा है।

(ग) अंधविश्वासों के चंगुल में फँसकर लोगों को अनेक हानियाँ उठानी पड़ती हैं। वे बीमार होने पर झाड़-फूँक करवाते हैं तथा इलाज़ के स्थान पर ताबीज़ पहनने में अधिक विश्वास करते हैं। इस कारण रोगी के जीवन तक को खतरा हो जाता है। अंधविश्वास के कारण ही भारतीय समाज में धर्मभीरु लोग बाबाओं, तांत्रिकों को भगवान तक मान बैठते हैं।

(घ) प्रस्तुत गद्यांश से हमें मन में अंधविश्वास को न रखने की सीख मिली है। हमें हर चीज़ को वैाानिक दृष्टिकोण के साथ देखना चाहिए और ऐसे अन्य लोगों को भी सही राह दिखाने का प्रयास करना चाहिए, जो अंधविश्वास के कारण अपने विवेक को पूरी तरह नष्ट कर चुके हैं।

(ङ) 'प्रचार-प्रसार' में द्वंद्व समास है।

2. (क) 'इतने ऊँचे उठो कि जितना उठा गगन है।'–पंक्ति के द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि व्यक्ति को गगन के समान ऊँचा उठने अर्थात् अपने व्यक्तित्व को विशाल बनाने के लिए परमार्थ की भावना से कार्य करना पड़ेगा तथा ऊँच-नीच, भेदभाव जैसे विकारों को अपने मन से निकालकर सभी को समानता की दृष्टि से देखना पड़ेगा।

(ख) 'लो अतीत से उतना ही जितना पोषक है।'–पंक्ति में अतीत की कटु व अनुपयोगी बातों को ग्रहण न करके उन बातों को ग्रहण करने का आह्वान किया गया है, जिनके द्वारा जीवन विकसित हो तथा कुछ सकारात्मक अनुभव प्राप्त हो सके।

(ग) आज जग भेद-भाव, सांप्रदायिक संकीर्णता, धर्म की गलत सोच आदि की ज्वालाओं में जल रहा है।

(घ) धरती को स्वर्ग बनाने के लिए हमें समाज तथा लोगों के मन में व्याप्त विकारों के कारण जो भी कुरूपता आ चुकी है, उसे अच्छे संस्कारों से मिटाना पड़ेगा। यदि हम ऐसा करने में सफल हो गए, तो हमारा प्रयास सफल हो जाएगा।

(ङ) 'परि' व 'आ' उपसर्ग।

खंड–ख

3. (क) जो लोग मृदुभाषी होते हैं, वे सभी का हृदय जीत लेते हैं।

(ख) न तो तुम उसे पहचान सके और न ही मैं।

(ग) मिश्र वाक्य।

4. (क) उनके द्वारा प्रतिदिन इसी समय पूजा की जाती है।

(ख) दर्द के मारे उनसे सोया नहीं जा सका।

(ग) उसने तुम्हें पहले भी कई बार समझाया था।

(घ) कर्तृवाच्य।

5. (क) **सज्जनता**– भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक।

(ख) **यह**– सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य–'कोठी'।

D:\Anit RSPL_2017\SACHIN\Xth A\Lot - 1 2nd Proof 08-12-2017

(ग) **दिनभर**– कालवाचक क्रियाविशेषण, विशेष्य क्रिया–'खेलते रहते थे'।

(घ) **सो रहा था**– अकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग, भूतकाल।

6. (क) विषाद, चिंता, भयपूरित स्मृति।

(ख) रौद्र रस से संबंधित काव्य-पंक्तियाँ– रे नृप बालक कालबस, बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु, बिदित सकल संसार।।

(ग) विस्मय (आश्चर्य)।

(घ) वीर रस।

खंड–ग

7. (क) जो व्यक्ति अपनी बुद्धि अथवा विवेक से किसी भी नए तथ्य को दर्शन करता है, उसी व्यक्ति को वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कहा गया है।

(ख) 'संस्कृति' पाठ में लेखक ने बताया है कि संस्कृति जीवन का चिंतन और मौलिक सृजन से भरा रूप है, जबकि मनुष्य के रहन-सहन, जीवन जीने एवं आविष्कृत वस्तुओं के उपभोग का तरीका सभ्यता के अंतर्गत आता है। इस प्रकार देखने में प्रायः एक जैसी लगने वाली इन दोनों संज्ञाओं में धरती-आसमान का अंतर है।

(ग) आविष्कर्ता अपनी बुद्धि व विवेक के बल पर जो खोज करता है, उसमें उसकी मौलिकता होती है, जबकि उसके वंशज उसकी उसी खोज को आधार बनाकर उससे भी अधिक जानकारी जुटा लेते हैं, किंतु उनके उस उद्घाटन में उस मौलिक खोज की अधिक महत्ता होती है। ऐसा लेखक ने इसलिए कहा है ताकि वह अपनी इस बात को पाठकों तक पहुँचा सके कि अपनी बुद्धि तथा विवेक से किसी तथ्य की मौलिक शोध श्रेष्ठतम है, जबकि बाद में उस विषय पर चाहे कितना ही ज्ञान बढ़ जाए, किंतु वह उस मौलिक ज्ञान से अधिक श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। अतः मौलिक शोधकर्ता जहाँ संस्कृत कहलाएगा, वहीं उसका अनुकरण करके उसी ज्ञान को आगे ले जाने वाले लोग सभ्य तो कहला सकते हैं, किंतु उसके समान संस्कृत नहीं।

8. (क) बिस्मिल्ला खाँ साहब अपने धर्म के प्रति अपने मन में जतना आदर भाव रखते थे, उतना ही बाबा विश्वनाथ व बाला जी के प्रति भी रखते थे। वे पारिवारिक परंपरा का निर्वाह करते हुए जहाँ मुहर्रम पर शहनाई नहीं बजाते थे और 8 तारीख को नौहा बजाते हुए 8 किलोमीटर की दूरी नम आँखें लिए तय करते थे, वहीं हनुमान जयंती पर चलने वाले संगीत कार्यक्रम में पाँच दिनों तक शहनाई बजाते थे। उनके मन में दोनों धर्मों के प्रति गहरा लगाव था। इससे पता चलता है कि बिस्मिल्ला खाँ भारत की मिली-जुली (गंगा-जमुनी) संस्कृति के प्रतीक थे।

(ख) लेखिका मन्नू भंडारी और उनके पिता के मध्य वैचारिक अंतर का कारण यह था कि उनके पिताजी यह तो चाहते थे कि उनकी बेटी घर में आए लोगों के बीच उठे-बैठे, किंतु उन्हें लेखिका का हड़तालें करवाना, नारे लगाना, लड़कों के साथ आंदोलन करते हुए सड़कों पर घूमना बिलकुल पंसद नहीं था, जबकि लेखिका अपने पिताजी द्वारा दी गई केवल घर की आज़ादी के दायरे में नहीं चलना चाहती थीं।

(ग) 'इतनी ममता, इतना अपनत्व इस साधु में अपने हर एक प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था।' लेखक के इस कथन के आधार पर फ़ादर बुल्के के चरित्र की ममता, अपनत्व, बंधुता, सद्भावना, स्नेह जैसी अनेक विशेषताओं का पता चलता है। वास्तव में, उनके व्यक्तित्व में ममत्व व अपनत्व का इतना अधिक भाव समाया था कि वह अपने परिचितों पर सदैव उमड़ता रहता था। उनके व्यवहार में दूसरों के प्रति अपनत्व का भाव भरा था, उनकी रंगों में दूसरी के लिए मिठास भरा अमृत था, उन्होंने जीवनभर सबको असीम स्नेह देकर अपने आशीष से परिपूर्ण रखा था।

(घ) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगा देखकर हालदार साहब इसलिए भावुक हो उठे, क्योंकि सरकंडे का चश्मा ठीक वैसा था, जैसा बच्चे खेल-खेल में बना लेते हैं। अतः वे सोचने लगे कि कैप्टन के न रहने पर नेता जी की मूर्ति पर सरकंडे का यह चश्मा या तो बच्चों ने लगाया या फिर किसी ऐसे व्यक्ति ने लगाया होगा, जिसके पास फ्रेम नहीं होगा और उसने बच्चों से वह सरकंडे का चश्मा मूर्ति पर लगाने के लिए कहकर ले लिया होगा। चाहे यह कार्य बच्चों ने किया हो या किसी अन्य व्यक्ति ने, किंतु इस कार्य से यह स्पष्ट हो गया कि हमारे देश के नागरिकों के मन में देशभक्ति की भावना कभी खत्म नहीं होगी।

9. (क) इस काव्यांश में कवि फागुन की शोभा का वर्णन कर रहा है।

(ख) 'कहीं साँस लेते हो, घर-घर भर देते हो।'—इस पंक्ति द्वारा कवि यह कहना चाहता है कि फागुन के आगमन के समय पेड़-पौधे रंग-बिरंगे पुष्पों से भर जाते हैं तथा पूरे वातावरण में मकरंद की भीनी-भीनी सुगंध समाहित हो जाती है।

(ग) 'पत्तों से ... रही है।'—पंक्तियों में फागुन के समय वातावरण में छाई अद्भुत शोभा का वर्णन है। यह ऐसी शोभा है, जिससे आँखें हटाने का मन नहीं होता है। पेड़-पौधे हरी पत्तियों एवं लाल फूलों से सज-धज गए हैं। सुगंधित पुष्पों की माला उन्होंने गले में पहनी हुई है। पुष्पमय यह वातावरण अपनी अनूठी छवि से सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।

10. (क) 'दुख है न चाँद लिखा शरद रात आने पर'—इस पंक्ति में जीवन के अतीत की स्मृतियों में उलझी स्थिति की ओर संकेत किया गया है। इन पंक्तियों में कवि यह कहना चाहता है कि जिस प्रकार शरद पूर्णिमा की रात को चाँद न निकले, तो शरद पूर्णिमा का संपूर्ण सौंदर्य अधूरा प्रतीत होता है, उसी प्रकार मनुष्य को जीवन में अपेक्षित सुख न मिलने पर उसका दुख उसे जीवनभर सताता है अर्थात् मनुष्य अपने अतीत में जो चाहे और वह उसे न मिले, तो उदासी उसके जीवन को घेर लेती है। इसलिए जीवन में सच्चे सुख के लिए अतीत की यादों को भुला देना ही बेहतर है।

(ख) फ़सल को ढेर सारी नदियों के पानी का जादू इसलिए कहा गया है, क्योंकि नदियों के जल से सिंचित होकर ही फ़सल फलती-फूलती है। नदियों के ऊपर बाँध बनाकर उसमें से नहरें निकाली जाती हैं। नहरों द्वारा खेतों तक पानी पहुँचाया जाता है, जिससे फ़सलों की सिंचाई होती है और उन्हें सही आकार मिलता है।

(ग) 'संगतकार' कविता हमें यह संदेश देती है कि जीवन में सफलता दिलवाने में स्वयं के श्रम एवं प्रयासों के साथ-साथ संगतकार के समान उन सहयोगियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, जो निश्छल भाव से हमारी सहायता करते हैं। कठिनाइयों के समय में उनका यही थोड़ा-सा निश्छल सहयोग हमें प्रेरणा एवं ऊर्जा से भर देता है और हम पुनः अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जुट जाते हैं। अतः हमें ऐसे व्यक्तियों के महत्त्व को सम्मान देना चाहिए।

(घ) 'उसे सुख का आभास तो था, लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था।'—इस पंक्ति में बताया गया है कि विवाह के समय बेटी को घर-गृहस्थी के सुखमय पक्ष का आभास तो था, किंतु उसके कठोर पक्ष का ज्ञान नहीं था। वह विवाह के सुखमय जीवन की सुखद कल्पना तो कर सकती थी, किंतु वहाँ पर मिलने वाली कठोर सच्चाइयों, ससुराल में मिलने वाली ज़िम्मेदारियों एवं चुनौतियों से अनभिज्ञ थी।

11. वास्तव में, हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। हिरोशिमा पर अणुबम की घटना से मानवता कराह उठी थी। विज्ञान का दुरुपयोग आज भी संसारभर में चल रहा है। आज भी आतंकवादी संगठन विज्ञान का दुरुपयोग करते हुए मानवता को लहूलुहान कर रहे हैं। दुनिया के अधिकांश देशों के पास परमाणु बम आदि हैं, जिन्हें देखकर लगता है कि विश्व आज आणविक हथियारों के ढेर पर बैठा है। मैं एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने के लिए मानवतावादी सोच, सद्भावना, मेलजोल, वसुधैव कुटुम्बकम् तथा जियो और जीने दो आदि की भावना जैसे जीवन-मूल्यों के विकास करने का प्रयास करूँगा। मैं इस संदर्भ में लेख आदि लिखकर समाचारपत्रों में प्रकाशित करवाऊँगा और वैश्विक शांति का सच्चा रक्षक बनने की शपथ लेकर इस दिशा में अपने प्रयास जारी रखूँगा।

अथवा

'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की दुनिया माँ की ममता, पिता के दुलार व संगी-साथियों के साथ खेलकूद से सजी-सँवरी थी, किंतु आज नगरीय व महानगरीय जीवन में 'क्रैच कल्चर' व कमरे में बंद होकर आभासी दुनिया (वर्चुअल वर्ल्ड) में खोया बचपन माता-पिता की व्यस्तता, एकल परिवार की कमियों तथा बढ़ते बाल अपराधों के कारण अब बाहर नहीं जा पाता है, संगी-साथियों के साथ भी सीमित समय के लिए वह खेल पाता है, इससे उसके अंदर भाईचारा, मेलजोल, सहयोग, अपनापन व आदर-सत्कार जैसे जीवन-मूल्यों में कमी आई है तथा इस कमी ने उसे बालसुलभ अनेक सुखों से वंचित कर दिया है। आज के बच्चों में जीवन-मूल्यों को उतारने के लिए सर्वप्रथम माता-पिता को उनके साथ अधिकतम समय बिताने का प्रयास करना चाहिए और अपनी देख-रेख या किसी विश्वासपात्र की निगरानी में ही सही, उन्हें बाहर खेलने अवश्य भेजना चाहिए। ऐसा करने से उनकी दुनिया केवल आभासी दुनिया यानी 'वर्चुअल वर्ल्ड' तक नहीं सिमटेगी और वे वास्तविक संसार के लिए भी स्वयं को तैयार कर सकेंगे।

खंड–घ

12. (क) **जल ही जीवन है**

'जल है, तो कल है।' वास्तव में यह उद्‌घोष हमें जल के उपयोग के प्रति उदासीनता मिटाकर जागरुक बनने का संदेश दे रहा है। यह आह्‌वान कर रहा है कि यदि जल होगा, तभी कल होगा, वरना इस धरती पर कुछ न रहेगा इसलिए जल के सही उपयोग हेतु जागरुक बनें, ताकि आने वाली पीढ़ी को यह प्राकृतिक धरोहर उसी रूप में प्राप्त हो सके, जिस रूप में हमारे पूर्वजों ने हमें सौंपी है।

हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि जल अमूल्य है, इसकी एक-एक बूँद में जीवन है। जल जीवनदायी तत्व है। शरीर के निर्माण में जो पाँच तत्व आवश्यक होते हैं, उनमें जल एक मुख्य तत्व है। 'जल बिनु सारहीन संसारा' वास्तव में, जल के बिना संसार निस्सार है। जल से ही इसका अस्तित्व है, जल नहीं, तो जग नहीं। जल अर्थात् पानी की उपयोगिता रहीम ने भी 'बिन पानी सब सून' कहकर उजागर की थी।

निस्संदेह, जल ही जीवन है और इस उपयोगी तत्व को हमें नासमझी से यूँ ही बर्बाद नहीं करना चाहिए। आज विश्व के आगे जो समस्याएँ चुनौती बनकर खड़ी हैं, उनमें जल भी एक प्रमुख समस्या है और संभावना तो यह भी है कि अगर तीसरे विश्व युद्‌ध की नौबत आई, तो उसका प्रमुख कारण जल ही होगा। इस कारण आवश्यक है कि हम जल का समुचित उपयोग करें और इस जीवनदायी तत्व की ज़रा भी अनदेखी न करें।

(ख) **परिश्रम सफलता की कुंजी है**

परिश्रम जीवन में सफलता पाने का मूलमंत्र है। यह कल्पवृक्ष है, जिससे जीवन की किसी भी इच्छा को पूरा किया जा सकता है। यह कामधेनु है, जिससे जो भी माँगो, वह मिल जाता है। इसके द्‌वारा कैसे भी दुर्गम लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य ने परिश्रम के बल पर असंभव कार्य को भी संभव कर दिखाया है। परिश्रम के बल पर चट्‌टानों को काटकर सड़कें बनाई गईं, रेगिस्तान में नहरें निकाली गईं और अंतरिक्ष व प्रकृति के अनेकानेक रहस्यों को सुलझाया गया है। यदि यह कहा जाए, तो कोई भी अतिशयोक्ति न होगी कि मनुष्य परिश्रम के बलबूते पर ही आदिकाल से सफलताओं का स्वर्णिम इतिहास रच रहा है। निस्संदेह परिश्रम संपन्नता लाता है, जबकि अकर्मण्यता विपन्नता लाती है। परिश्रमी व्यक्ति जीवन के सभी सुखों का उपभोग करता है, जबकि अकर्मण्य जीवन की सामान्य सुविधाओं के लिए भी तरसकर रह जाता है।

संत शिरोमणि तुलसीदास जी ने सही कहा था–''सकल पदारथ हैं जग माहीं। कर्महीन नर पावत नाहीं।'' अर्थात् इस संसार में सुख देने वाले सभी पदार्थ हैं, किंतु जो लोग अकर्मण्य हैं, उन्हें ये प्राप्त नहीं होते। अतः जीवन के सारे मनोरथ पूरे करने के लिए परिश्रम को अपनाना चाहिए, क्योंकि कहा भी गया है–

''उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथै।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।''

(ग) **खेल गतिविधियों का महत्त्वः विशेषकर बालिकाओं के लिए**

खेल गतिविधियाँ शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक विकास के लिए अति आवश्यक हैं। यह कहना बिल्कुल भी गलत न होगा कि जीवन को व्यवस्थित आकार खेल गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेने पर ही मिल सकता है, क्योंकि इन गतिविधियों में भाग लेने से शारीरिक व मानसिक विकास तो होता ही है, साथ ही चरित्र में अनुशासन, धैर्य, संयम व समूह के साथ कार्य करने की क्षमता का भी विकास होता है और यह सोलह आने भर सही है कि इन उदात्त गुणों से ही व्यक्तित्व में संपूर्णता का भाव आता है। खेलकूद पर प्रायः बालकों का ही अधिकार मान लिया जाता है, जबकि बालिकाओं को परंपरावादी सोच के कारण घरेलू कामों में हाथ बँटाने की सीख दी जाती है और कहीं कुछ ऊँच-नीच न हो जाए, इस जुमले को कहकर उन्हें स्कूलों में भी खेलों से दूर रहने की सलाह दी जाती है। ग्रामीण परिवेश में तो बालिकाओं के प्रति इस परंपरावादी सोच की जड़ें बहुत गहराई तक जमी हुई हैं, किंतु नगरीय परिवेश में आज माहौल बदल रहा है और लोग बेटियों को भी खेल गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

खेल गतिविधियों में भाग लेने से बालिकाओं का शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक विकास होता है। खेल उनके अंदर आत्मविश्वास पैदा करते हैं। खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने से उनका मुकाबला विभिन्न नगरों, ज़िलों व प्रांतों की विपक्षी खिलाड़ियों से होता है। इससे उन्हें एक-दूसरे की संस्कृति को समझने का अवसर मिलता है। शारीरिक रूप से मज़बूती उन्हें विपरीत परिस्थितियों में आत्मरक्षा के लिए भी दृढ़ बनाती है और इस प्रकार खेल गतिविधियाँ उन्हें नाजुक से मज़बूत बना देती हैं। खेलों में मिली हार, जहाँ उन्हें निराश न होकर पुनः लक्ष्य की ओर सधे कदमों से बढ़ने की प्रेरणा देती है, वहीं जीत से मिली खुशी,खुशियों के पलों को सबके साथ बाँटने और जीत के जज्बे को मन में बसाकर अर्जुन के समान बन जाने की प्रेरणा देती है। इन गतिविधियों में भाग लेने से उनके चरित्र में जिन गुणों का समावेश होता है, उनसे बालिकाओं को भावी जीवन में अपनी अलग-अलग भूमिकाओं का निर्वाह करने में मदद मिलती है।

आज ज़रूरत इस बात की है कि बालिकाओं के लिए हर स्तर पर खेल गतिविधियों के आयोजन की व्यवस्था की जाए तथा अभिभावकों को भी बालिकाओं को उनकी रुचि के अनुकूल खेल को खेलने की अनुमति देने तथा उस खेल में प्रशिक्षण दिलावाने के लिए प्रयत्न किए जाने चाहिए, क्योंकि ऐसा करके ही देश को एक नहीं, बल्कि कई सानिया मिर्ज़ा, साइना नेहवाल, पी०टी० उषा, दीपिका, साइना नेहवाल, पी०बी० सिन्धू, साक्षी मलिक, प्राप्त हो सकेंगी। अतः संकुचित विचारधारा को छोड़कर बेटियों को खेलकूद के लिए प्रोत्साहित करें।

13. सेवा में

श्रीमान ज़िलाधिकारी

अ ब स नगर

जनपद–क ख ग नगर

दिनांक–23/07/2017

विषय– रसोई गैस की कालाबाज़ारी तथा अवैध रूप से सिलिंडर में गैस भरने का कार्य धड़ल्ले से चलने की सूचना तथा दोषियों के खिलाफ़ सख्त कार्रवाई का अनुरोध।

महोदय,

सविनय निवेदन इस प्रकार है कि मैं आपके ज़िले के अ ब स नगर का एक जागरुक निवासी हूँ तथा इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान नगर में बढ़ती रसोई गैस की कालाबाज़ारी तथा अवैध रूप से सिलेंडर में गैस भरने का कार्य धड़ल्ले से चलने की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि हमारे नगर में पिछले कई महीनों से गैस एजेंसी के कुछ कर्मचारी एवं नगर के कुछ लोग उल्लिखित कार्य में लिप्त हैं। उनके इस अवैध कार्य से नगरवासियों को बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। लोगों को बुक करवाने के बाद भी सही समय पर गैस नहीं मिल पाती है और कई बार तो कंपनी की ओर से सिलेंडर डिलीवर होने का मैसेज तक आ जाता है, किंतु उपभोक्ता के घर की बजाय वह सिलेंडर अवैध रूप से सिलेंडर भरने वाले लोगों के पास पहुँचा दिया जाता है। जब कोई उपभोक्ता उनके पास शिकायत करने जाता है, तो उस मैसेज को तकनीकी कमी की बात कहकर वापस भेज देते हैं तथा ज्यादा कहने पर दादागिरी दिखाने लगते हैं।

अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया इस संदर्भ में दोषियों के खिलाफ़ सख्त से सख्त कार्रवाई करने का कष्ट करें। इस कार्य के लिए समस्त नगरवासी आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

अतुल आर्य

सचिव

जागरुक नागरिक मंच

अ ब स नगर

अथवा

परीक्षा भवन
अ ब स स्कूल
क ख ग नगर

दिनांक–10/12/2017

पूजनीया माँ,

सादर चरण स्पर्श।

मैं यहाँ पर कुशलपूर्वक हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी ईश्वर की कृपा से सकुशल होंगी। आज मैं यह पत्र आपको यह शुभ समाचार देने के लिए लिख रहा हूँ कि मैंने अपने विद्यालय की 'अंतर्सदनीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता' में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस सदन में विद्यालय के छहों सदनों के दो-दो प्रतिभागियों ने भाग लिया था। हमें 'आधुनिक युग में जीवन मूल्य केवल पुस्तकों तक सीमित होकर रह गए हैं' विषय के पक्ष या विपक्ष में 3 मिनट तक अपने विचार प्रस्तुत करने थे। मैंने इस विषय के विपक्ष में अपने विचार प्रकट किए और मैं अपनी प्रभावशाली प्रस्तुति से निर्णायक मंडल व सभी दर्शकों पर अपना प्रभाव जमाने में सफल रहा। मेरी प्रस्तुति के समय मुझे दर्शकों की ओर से तीन बार तालियाँ मिलीं, जिससे मैंने प्रतियोगिता में कोई-न-कोई स्थान प्राप्त होने का अनुमान लगा लिया था, किंतु जब परिणाम की घोषणा हुई और मेरी प्रस्तुति व सदन को प्रथम चुना गया, तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मैं जब आऊँगा, तो प्रधानाचार्य जी द्वारा दी गई ट्रॉफ़ी लेकर आऊँगा।

ईश्वर की कृपा, आपके व पिता जी के आशीर्वाद तथा अपने परिश्रम के बल पर अब मैं वार्षिक परीक्षा में भी विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करने का प्रयास करूँगा।

पिता जी व भैया को मेरा प्रणाम कहना।

आपका बेटा
य र ल

14.

उजाला संस्था के सौजन्य से
दीपावली
मेले का भव्य आयोजन
(सफल आयोजन का पाँचवाँ वर्ष)

मेले के आकर्षण

- पीज़ा हट, मैक्डोनाल्ड सहित ब्रांडेड फ़ूड स्टॉल
- झूले, गेम्स आदि की व्यवस्था
- 'टैलेंट हंट' में गायन, वादन व नृत्य की प्रतियोगिताएँ
- उत्तम सुरक्षा-व्यवस्था

आयोजन तिथि–26 अक्टूबर से 28 अक्टूबर तक
समय–दोपहर 2 बजे से रात्रि 9 बजे तक
आयोजन-स्थल–रामलीला मैदान

उजाला संस्था–ग्रीनपार्क, अ ब स नगर, संपर्क–xxxxxx1000

अथवा

प्रयास संस्था

भरोसे भरा एक कदम

संकल्पित होकर कहें आज
आइए, बदलें शिक्षा से समाज।

विशेषताएँ

- 100 से अधिक निर्धन बच्चों को निःशुल्क शिक्षा
- निःशुल्क मिड डे मील, पुस्तकें एवं वेशभूषा

'प्रयास' के इस पुनीत अभियान में शिक्षादान के इच्छुक व्यक्तियों की आवश्यकता है। कृपया समाज के इन ज़रूरतमंद बच्चों को पढ़ाने के लिए आगे आएँ। आपका प्रयास इन बच्चों के जीवन में उजाला लाने में सफल होगा। कृपया इच्छुक व्यक्ति नीचे दिए पते या फ़ोन नंबर पर श्रीमती साहनी से संपर्क करें।

प्रयास पाठशाला, जी-142, सेक्टर-15, अ ब स नगर, फ़ोन–xxxxxx1000